जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आगम में छह द्रव्यों की मुख्यता से और अध्यात्मरूप परमागम में आत्मद्रव्य की मुख्यता से कथन होता है।
ह्न परमभावप्रका. नयचक्र, पृष्ठ :102

वर्ष : 29, अंक : 7 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

नागपुर एवं कोल्हापुर के विविध क्षेत्रों में ग्रुप शिविर सम्पन्न

1. नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अखिल भा. जैन युवा फैडरेशन नागपुर के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं श्रीमती रतनबाई मगनलालजी जैन (सांवला) की स्मृति में श्री हुकमचन्दजी, शांतिकुमारजी जैन के सहयोग से विदर्भ के 27 स्थानों पर दिनांक 3 जून से 11 जून, 06 तक नवम् बाल-युवा सामूहिक संस्कार शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में **नागपुर (नेहरु पुतला) में** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित अभिषेकजी अलीगढ़ एवं श्रीमती सुनीताजी जैन नागपुर; **यवतमाल** में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर एवं श्रीमती ज्योतिजीमांगुलकर काटोल; **वर्धा** में पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़; **रामटेक** में पण्डित विजयजी आह्वाने देवलगाँवराजा; **मूर्तिजापुर** में पण्डित वीरेन्द्रजी वीर फिरोजाबाद, पण्डित संतोषजी जैन अम्बड़ एवं पण्डित किशोरजी धोंगडे रहाटगाँव; **चन्द्रपुर** में पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी; **शेन्दुरजनाघाट** में पण्डित रविन्द्रजी काले कारंजा; **नेरपिंगलई** में पण्डित सुरेशजी काले राजुरा; **दारव्हा** में पण्डित सत्येन्द्रजी मिरकुटे पानकन्हेरगाँव; **आर्वी** में पण्डित अतुलजी ललितपुर; **पुलगांव** में पण्डित राहुलजी अलवर; **नागपुर (तारण-तरण)** में पण्डित स्वतंत्रजी खरगापुर; **बुटीबोरी** में पण्डित सतीशजी बोरालकर डोणगाँव; **कलमेश्वर** में पण्डित प्रजयजी कान्हेड हिंगोली; **नाचनगाँव** में पण्डित मुकुन्दजी ढोके वसमतनगर; **वरुड** में पण्डित अरहंतवीरजी जैन फिरोजाबाद; **हिंगनघाट** में पण्डित अभिषेकजी जैन बांरा; **परतवाड़ा** में पण्डित सचिनजी गढी; **अचलपुर** में पण्डित विनयजी बूँदी; **भण्डारा** में पण्डित रविन्द्रजी महाजन परभणी; **जरुड** में पण्डित पंकजजी दहातोंडे परली; **देवली** में पण्डित अनुरागजी भगवाँ; **नागपुर (लक्ष्मीनगर)** में पण्डित ज्ञायकजी देवलाली; **कोंढाली** में पण्डित अनुभवजी मौ; **सिंदेवाही** में पण्डित नीरजजी सिंगोली; **बडनेरा** में पण्डित संयमजी अलीगढ; **हीवरखेड** में पण्डित संदीपजी जैन रावतभाटा आदि 39 विद्वानों द्वारा धर्मलाभ मिला।

शिविर का सामूहिक उद्घाटन समारोह 3 जून को शिखरचन्दजी मोदी नागपुर की अध्यक्षता में उद्घाटनकर्ता श्री अतुलजी कोटेचा नागपुर के करकमलों से सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री मुन्नालालजी जैन सागर ने किया। सभा का संचालन पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर ने किया।

सामूहिक समापन समारोह दिनांक 11 जून को श्री भरतभाई वाटविया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित नागेशजी पिडावा का मार्मिक उद्बोधन प्राप्त हुआ।

अन्त में सभी स्थानों के प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर प्रभारी एवं विद्वानों का सम्मान किया गया। पुरस्कार वितरण-कर्त्ता श्री नरेशकुमारजी सिंघई नागपुर थे। सभा का संचालन पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली ने किया।

शिविर में कुल 12 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया तथा 2700 बालकों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रमाण पत्र प्राप्त किये।

सम्पूर्ण शिविर का संयोजन पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल तथा सह-संयोजन पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी एवं पण्डित देवेन्द्रजी बण्ड ने किया। साथ ही स्थानीय कार्यकर्ताओं का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी जैन ने किया। **ह्न जयकुमार देवड़िया**

2. कोल्हापुर (महा.) : यहाँ सर्वोदय स्वाध्याय समिति कोल्हापुर के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 6 जून, 2006 तक कोल्हापुर विभाग के 19 स्थानों पर ग्रुप शिविर लगाया गया।

शिविर में पण्डित अभिनन्दनजी पाटील, पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, पण्डित अनिलजी आलमान, पण्डित दीपकजी अथणे, पण्डित रोहनजी रोटे, पण्डित रमेशजी शिरहट्टी, पण्डित प्रसन्नजी शेटे, पण्डित अभिजीतजी अलगोंडर, पण्डित मिलिन्दजी केटकाले, पण्डित उमेशजी घोसरवाडे, पण्डित रविन्द्रजी आलमान, पण्डित संदीपजी पाटील, पण्डित दीपकजी मजलेकर, पण्डित भरतजी कोरी, पण्डित संयमजी शेटे, पण्डित दीपकजी चौगुले, पण्डित अमोलजी निर्वाणे, पण्डित सनतजी खोत, पण्डित श्रेणिकजी कोरेगावे, पण्डित सुकुमारजी पाटील आदि विद्वानों के सहयोग से नरंदे, वलीवडे, वसगडे, कबनूर, गणेशवाडी, अकीवाट, घोसरवाड, शिरोली, जैनापुर, नेज, चिंचवाड, शिरदवाड, भेंडवडे, कोल्हापुर, साडवली, आलते, मानकापुर और खिद्रापुर में धर्मप्रभावना की गई।

सभी स्थानों पर प्रतिदिन तीनों समय प्रवचन, एवं कक्षायें संचालित हुई। रात्रि में जिनेन्द्र-भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

दिनांक 7 जून को सर्वोदय सरोज स्मारक कोल्हापुर में आयोजित समापन समारोह में श्री अशोकजी पाटील, श्री रमेशजी आदण्णावर, श्री अशोकजी मोहिरे आदि अतिथि उपस्थित थे।

शिविर में 1230 बालक एवं 840 प्रौढों ने धर्मलाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित जिनचन्दजी आलमान की प्रेरणा से पण्डित भरतजी शास्त्री बाहूबली एवं पण्डित अभिजीतजी पाटील वसगडे के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। ●

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

६. जो जस करे सो तस फल चाखा

ज्ञानेश ने अपनी पत्नी सुनीता को दूसरों के कार्यों के करने की चिन्ता से मुक्त करने के लिए भारतीय धार्मिक मान्यताओं के आधार पर विश्व के कर्तृत्व की वास्तविकता से अवगत कराने के लिए कहा कि ह्न 'देखो सुनीता! यदि तुम्हें निम्नांकित तीन विश्व व्यवस्थाओं में से किसी एक को चुनने को कहा जाय तो तुम कौन-सी विश्व-व्यवस्था को पसन्द करोगी? 1. ईश्वरकृत, 2. मानवकृत या 3. ऑटोमेटिक ?'

सुनीता ने विनम्रता से उत्तर दिया ह्न मैं ही क्या ? कोई भी समझदार व्यक्ति ऑटोमेटिक व्यवस्था ही पसन्द करेगा; क्योंकि इस व्यवस्था में पराधीनता पक्षपात या अन्याय की गुञ्जाइश नहीं है।

हम आज अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि जब से कम्प्यूटर के द्वारा रेल्वे टिकटों के ऑटोमेटिक सिस्टम से रिजर्वेशन होने लगे, तब से आरक्षण टिकटों के वितरण में होनेवाला भयंकर भ्रष्टाचार समाप्त सा ही हो गया है। सभी यात्री निश्चिन्त हो गये हैं। टिकटों की प्रतीक्षा सूची का क्रमांक ऑटोमेटिकरूप से टिकटों की वापसी के आधार पर क्रमश: घटते-घटते स्वयं अपने क्रम में आता है, कोई बे-इन्साफी नहीं कर सकता।

इसी बात को व्यक्तियों के बजन तोलने की ऑटोमेटिक मशीन के उदाहरण से भी समझ सकते हैं। सार्वजनिक स्थान पर लगी ऑटोमेटिक मशीन पर जितने व्यक्ति तुलेंगे, नियम से उतने सिक्के उसमें पड़े मिलेंगे और दूसरी ओर सादा काँटा भी वहाँ लगा हो, जिसपर तौलने की जिम्मेदारी एक ईमानदार व्यक्ति को सौंपी गई हो और आदेश दिया हो कि ह्न वह पचास पैसे में प्रत्येक व्यक्ति को तौलकर उसका नाम रजिस्टर में दर्ज करे और शाम तक जितने व्यक्ति उस काँटे पर तुले हों, पचास पैसे के हिसाब से उतनी धनराशि कार्यालय में जमा कराये।

सबसे पहले तो वह ईमानदार व्यक्ति उस काँटे पर स्वयं तुलेगा और रजिस्टर में अपना नाम नहीं लिखेगा। अपने बेटे-बेटी और माता-पिता व पत्नी को तौलेगा और उनके नाम भी उसमें दर्ज नहीं करेगा। यदि दोस्त-मित्र आ गये तो उन्हें भी तौल देगा और उनसे भी पैसे नहीं लेगा। इसतरह जितने व्यक्ति तुलेंगे, गारन्टी से उनके हिसाब से उतने रुपये जमा नहीं होंगे। इसमें उसे बे-ईमानी-सी लगती ही नहीं है। वह तो मात्र उसे बे-ईमानी मानता है कि मैंने सौ व्यक्तियों से पैसे ले लिये हों और पचास के जमा कराऊँ, पचास के खा-पचा जाऊँ। जब मैंने उनसे पैसे लिये ही नहीं तो इसमें बे-ईमानी की बात ही क्या है ?

पर क्या उसका यह सोच सही है ? नहीं, कदापि नहीं। ऑटोमेटिक मशीन ऐसा नहीं करती, अत: ऑटोमेटिक व्यवस्था ही सही है।

मानवकृत व्यवस्था में और ऑटोमेटिक व्यवस्था में जो अन्तर है, वह तो उक्त दो उदाहरणों से स्पष्ट हो ही गया होगा। अत: मेरा तो दृढ़मत यही है कि इन दोनों में तो ऑटोमेटिक व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है।

ज्ञानेश ने कहा ह्न 'सुनीता ! मानवीय और ऑटोमेटिक में तो ऑटोमेटिक सिस्टम ही ठीक है; क्योंकि उसमें बे-ईमानी की सम्भावना नहीं है। और मानवीय व्यवस्था में बे-ईमानी की सम्भावनाएँ प्रबल हैं; परन्तु ईश्वर तो सर्वशक्ति सम्पन्न और सर्वज्ञ होता है, उसके कर्तृत्व में तो ऐसी कोई कमी नहीं रहना चाहिए ?'

सुनीता बोली ह्न 'हाँ, यही तो मैं भी सोच रही थी; आपने तो मानो मेरे मुँह की बात छीन ली; परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि यदि वस्तुत: ईश्वर यह विश्व व्यवस्था अपने हाथ में ले लेता तो व्यवस्था इतनी सुन्दर होती कि किसी को कोई भी शिकायत नहीं रहती, परन्तु अफसोस तो यही है कि ऐसा नहीं हुआ। जिसका सारा विश्व साक्षी है। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, कहीं भूचाल तो कहीं सुनामी सागर का प्रकोप, चोरी, गुण्डागर्दी, बलात्कार, रिश्वतखोरी, कोढ़, केंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ क्या-क्या गिनायें ह्न ये सब ईश्वर की कृतियाँ नहीं हो सकतीं। भला ऐसे भले-बुरे काम ईश्वर कैसे कर सकता है? और तुलसीदास तो यह लिखते हैं कि ह्न

कर्मप्रधान विश्वकरि राखा, जो जस करे सो तस फल चाखा

ईश्वर ने तो विश्व व्यवस्था को कर्म प्रधान कर रखा है, अत: जो व्यक्ति जैसे भले-बुरे कर्म करता है तदनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। ईश्वर स्वयं उसमें कुछ हस्तक्षेप नहीं करता। अब आप ही इसका समाधान बतायें।'

ज्ञानेश ने स्पष्ट किया ह्न सुनीता! मैं इस सम्बन्ध में स्वयं कुछ न कहकर हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और ईश्वर दर्शन के दार्शनिक विद्वान श्री माखनलाल चतुर्वेदी को प्रस्तुत करना चाहता हूँ। वे अपने आराध्य ईश्वर के सामने अपने पर हो रहे अन्याय से असन्तुष्ट होकर अपने दिल के दर्द को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ह्न

तू ही क्या समदर्शी भगवान ?
क्या तू ही है अखिल जगत का न्यायाधीश महान ?
क्या तू ही लिख गया 'वासना' दुनिया में है पाप ?
फिसलन[2] पर तेरी आज्ञा से मिलता कुम्भीपाक ?
फिर क्या तेरा धाम स्वर्ग है जो तप बल से व्याप्त,
क्या तू ही देता है जग को सौदे में आनन्द ?
क्या तुझसे ही पाते हैं मानव संकट दु:ख और द्वन्द ?
क्या तू ही है जो कहता है सब सम[4] मेरे पास ?
किन्तु प्रार्थना की रिश्वत पर करता शत्रु विनाश।
मेरा बैरी हो क्या उसका तू न रह गया नाथ ?
मेरा रिपु क्या तेरा भी रिपु रे ! समदर्शी नाथ ?
क्या तू ही पतित अभागों पर शासन करता है ?
क्या तू ही है सम्राट, लाज तज न्याय दण्ड धरता है ?
जो तू है तो मेरा माधव तू क्योंकर होवेगा ?
मेरा हरि तो पतितों को उठने को उंगली देगा,
माखन पावे वृन्दावन में बैठा विश्व नचावे।
वह मेरा गोपाल पतन से पहले पतित उठावे।।

कवि कहता है कि मेरा तात्पर्य यह है कि ह्न मैं तुझसे न्याय की क्या

आशा करूँ ? तुझसे तो वह पुलिस का सिपाही ही अच्छा है। यद्यपि उसके पास ऐसी कोई कानूनी शक्ति नहीं है, जिससे वह आँखों-देखी हत्या के अपराधी को भी मृत्युदण्ड दे सके या दिला सके; फिर भी दस-बीस हजार की बड़ी रकम रिश्वत में लेकर अपराधी को इतना दण्ड तो अप्रत्यक्षरूप से दे ही देता है। इस दण्ड से भी बहुत लोग अपराध करने से डरने लगते हैं; परंतु भगवान ! आपका तो हाल ही बे-हाल है। यदि वही हत्यारा आपके पास आकर यह प्रार्थना करता कि - हे प्रभु! मुझसे जो हत्या का अपराध बन गया है, उससे मुझे न्यायालय में निश्चित ही प्राणदण्ड मिलेगा; परन्तु यदि आप चाहेंगे तो कोई मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता। अत: मैं आपकी शरण में आया हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बचा लें, अन्यथा आपकी शरण में कोई क्यों आयेगा ? फिर आपको कोई प्रसाद भी नहीं चढ़ायेगा, पूजा भी नहीं करेगा।'

उसकी गिड़गिड़ाहट और धमकी सुनकर भगवान आपका सिंहासन ही हिल जाता है। असली ईश्वर को तो आज के युग में किसी ने देखा नहीं, पर फिल्मों के पर्दे पर तो तथाकथित भगवान का सिंहासन डोल ही जाता है। क्या यह सही है ?

ऐसे ईश्वर कर्तृत्ववादी दर्शन की बात महाकवि माखनलालजी चतुर्वेदी जैसे बुद्धिजीवियों के गले कुछ कम ही उतरती है।''

सुनीता ने कहा - ''इन तीनों व्यवस्थाओं में यदि मुझे चुनाव करने का मौका मिला तो मैं तो ऑटोमेटिक व्यवस्था ही पसन्द करूँगी।''

इस संवाद से इतनी शिक्षा तो मिल ही जाती है कि ह्न विश्व व्यवस्था कर्म प्रधान है, अत: हमें पाप कर्म से तो बचना ही है और पुण्य कर्म या सत्कर्म ही करना है; क्योंकि यही करने योग्य हैं। भले वह पापकर्म का दण्ड ईश्वर दे या कर्म की प्रकृति दे। **बुरे काम का बुरा नतीजा तो भोगना ही पड़ेगा।**

संभवत: इन्हीं उलझनों के न सुलझने से अधिकांश व्यक्ति ऑटोमेटिक (स्व-सञ्चालित) विश्व व्यवस्था में ही अपना विश्वास व्यक्त करने लगे हैं। ज्ञानेश के इन तथ्यों को सुनकर सुनीता विचारों में खो गई। वह सोचने लगी कि ह्न 'यदि ऐसा है तो फिर हम जो भाग-दौड़ करते हैं, क्या यह सब हमारा मात्र मोह है। यह समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण एवं रोचक सबजेक्ट तो है ही। कभी समय निकालकर इसे विस्तार से समझना होगा। ●

७. खोटे भावों का क्या फल होगा ?

गम्भीर, विचारशील और बड़े व्यक्तित्व की यही पहचान है कि वे नासमझ और छोटे व्यक्तियों की छोटी-छोटी बातों से प्रभावित नहीं होते, किसी भी क्रिया की बिना सोचे-समझे तत्काल प्रतिक्रिया प्रगट नहीं करते। अपराधी पर भी अनावश्यक उफनते नहीं हैं, बड़बड़ाते नहीं हैं; बल्कि उसकी बातों पर, क्रियाओं पर शान्ति से पूरी बात को समझ कर, उसके साइड इफेक्ट्स पर विचार करके उचित निर्णय लेते हैं, तदनुसार कार्यवाही करते हैं, यदि आवश्यक हुआ तो मार्गदर्शन भी देते हैं।

ज्ञानेश ने यही सोचकर धनेश से अधिक कुछ न कह कर बड़ी ही शालीनता से मात्र दो बातों पर विचार करने के लिये कहा। एक तो यह कि ह्न **'ये जो दूसरों का शोषण करके अपना पोषण करने आदि के खोटे भाव होते हैं, इनका फल क्या होगा ? और दूसरे यह कि जो दुश्चरित्र बन रहा है, वह क्यों बन रहा है ? इस पर गंभीरता से सोचो।**

धनेश उस समय तो ज्ञानेश की बातों की उपेक्षा करके चला गया; पर ज्ञानेश की बातों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। वे बातें उसके मन-मस्तिष्क पर छा गईं। अबतक धनेश पर ज्ञानेश के गंभीर व्यक्तित्व की कुछ-कुछ छाप भी पड़ चुकी थी, इस कारण वह रात में बहुत देर तक उन्हीं बातों के बारे में सोचता रहा। ज्ञानेश ने दो बातों पर विचार करने के लिए कहा ह्न एक तो यह कि ह्न **यह दुष्चरित्र कैसे बन रहा है और दूसरी यह कि ह्न ये जो खोटे भाव हो रहे हैं, इनका क्या फल भोगना होगा ?** धनेश सोचता है ह्न आखिर, ज्ञानेश यह कहकर मुझे समझाना क्या चाहता है, वह कहना क्या चाहता है ? वैसे बातें तो साधारण-सी लगतीं हैं, पर ज्ञानेश जैसा व्यक्ति कह रहा है, जिसके सामने श्रोता बने बैठे बड़े-बड़े विद्वान् सिर हिलाते हैं, वाह-वाह करते हैं, गजब...गजब... कहते हैं, गांठ का पैसा खर्च करके दूर-दूर से लोग उसे सुनने आते हैं। अत: उसकी बातों में वजन तो होना ही चाहिए।

दूसरे दिन ही धनेश ने ज्ञानेश से कहा ह्न ''मित्र ! तुम तो जानते ही हो कि मैं कितना व्यस्त रहता हूँ। अनेक सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से जुड़ा हूँ, थोड़ा-बहुत राजनीति में भी दखल रखना ही पड़ता है; क्योंकि मेरा धंधा भी कुछ ऐसा ही है ह्न जिसमें राजनैतिक प्रभाव तो चाहिए ही, अन्यथा आये दिन कुछ न कुछ झंझट हुए बिना न रहे। आज इन्कम टैक्स वालों का छापा तो कल पुलिस वालों की तहकीकात। फिर भी मैंने तुम्हारी बात पर विचार करने की पूरी-पूरी कोशिश की।

देखो भाई ! तुमने दो बातों पर विचार करने को कहा था। उनमें पहली जो चरित्र वाली बात है, वह तो साधु-संतों की बातें हैं।

रही बात 'भावों' की, सो उसके तो हम कीड़े ही हैं। दिन-रात भावों में ही खेलते हैं। हमारा सारा व्यापार-धंधा 'भावों' पर ही आधारित है। बिस्तर छोड़ते ही सबसे पहले हमारे हाथों में शेयर के बाजार भावों का अखबारी पन्ना ही तो होता है। बाजार-भावों का जैसा अध्ययन हमें है, वैसा शायद ही किसी को होगा। कोई माई का लाल इसमें हमें मात नहीं दे सकता। बाजार-भाव दो तरह के होते हैं, एक ....''

ज्ञानेश ने धनेश के द्वारा की गई भावों की विचित्र व्याख्या सुनकर पहले तो अपना माथा ठोक लिया। उसे विचार आया कि ह्न ''दिन-रात शेयर के धंधे में मस्त व व्यस्त धनेश को शेयर के भाव नहीं दिखेंगे तो और क्या दिखेगा ? यह क्या पहचाने पुण्य-पाप के परिणामों को ? अपने में दिन-रात हो रहे शुभ-अशुभ भावों को।''

ज्ञानेश ने हँसकर कहा - ''वाह ! धनेश भाई, वाह !! तुमसे यही अपेक्षा थी। जिसकी आँख पर जैसा हरा-पीला चश्मा चढ़ा होगा, उसे सब वस्तुएँ वैसी ही तो दृष्टिगत होंगी।''

धनेश ने विनम्र होकर पूछा ह्न''भाई ! इसमें मैंने गलत क्या कहा ?''

ज्ञानेश ने कहा ह्न ''भाई! तुम्हारे शेयर के भावों से हमें क्या लेना-देना ? बाजार भाव कितने प्रकार के होते हैं - यह तो अर्थशास्त्र का विषय

(शेष पृष्ठ 6 पर ....)

आध्यात्मिक शिक्षण

ा–शिविर पत्रिका

(पृष्ठ 3 का शेष ....)

है। हमने तो तुमसे धर्मशास्त्र के संदर्भ में आत्मा के शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप, राग-द्वेष रूप होनेवाले भावों के बारे में; आर्त-रौद्र रूप पाप भावों के बारे में विचार करने को कहा था और तुम समझे शेयर मार्केट के भाव। अस्तु !''

धनेश उद्योगपति है। उसके कई कल-कारखाने हैं, यद्यपि उनसे उसे अच्छी आय है; परन्तु आये दिन मजदूरों की माँगों की समस्या, कच्चा माल मँगाने की चिन्ता, उधारी की वसूली और छोटी-मोटी अनेक समस्याओं से जूझने के कारण जीवन में सुख-शान्ति मिलना तो बहुत दूर, समय पर खाना और सोना भी हराम हो जाता। साथ ही वह स्वयं शेयर बाजार में बड़ा ब्रोकर भी है, आमदनी तो इसमें भी खूब है; पर मानसिक शान्ति इसमें भी बिल्कुल नहीं है, हो भी नहीं सकती; क्योंकि **शेयर बाजार का स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि जब भाव चढ़ते हैं तो अनायास ही आसमान छूने लगते हैं और जब उतरते हैं तो अनायास ही पाताल तक पहुँच जाते हैं। कब/क्या होगा, पहले से कुछ ठीक से अनुमान भी नहीं लगता। इस कारण लोगों के परिणामों में बहुत उथल-पुथल होती है, हर्ष-विषाद भी बहुत होता है। दोनों ही स्थितियों में नींद हराम हो जाती है। व्यक्ति सामान्य नहीं रह पाता। ऐसे लोगों को जब अधिक तनाव होता है तो उन्हें सामान्य होने के लिये नशीली वस्तुओं का सहारा लेना ही पड़ता है, जो न सामाजिक दृष्टि से सम्मानजनक है और न ही सेहत के लिये हितकर। हिंसा जनक और नशाकारक पापमय परिणाम होने से धार्मिक दृष्टि से तो ये त्याज्य हैं ही।**

धनेश भी इस दोष से नहीं बच सका। वह भी यदा-कदा मद्यपान कर ही लेता है। जो मद्यपान करता है वह उसके सहभावी दुर्गुणों से भी कैसे बच सकता है ? धनेश मद्यपान के सहभावी दोषों से भी नहीं बच सका। शनैः-शनैः वह सभीप्रकार के दुर्व्यसनों की गिरफ्त में आ गया।

ज्ञानेश को बारम्बार विचार आता कि ''काश ! किसीतरह धनेश को अपनी वर्तमान पाप परिणति की पहचान हो जावे और इसके फल में होनेवाली अपनी दुर्दशा का आभास हो जावे तो निश्चित ही उसके जीवन में परिवर्तन आ जायेगा। अभी उसे इस पाप परिणति के दुष्परिणामों का पता नहीं है, इस कारण बेचारा दिन-रात पापाचरण में रचा-पचा रहता है।

जिस तरह एक अबोध बालक विषधर नाग के बच्चे से निर्भय व निर्द्वन्द भाव से खेलता है; क्योंकि उस भोले बालक को पता ही नहीं है कि यह विषधर का बच्चा कितना खतरनाक है, कितना प्राणघातक है ? यदि यह क्रुद्ध होकर काट खाये तो मरण निश्चित ही समझो। यदि उस बालक को उस हानि का ज्ञान हो जाये तो क्या वह फिर उससे खेलेगा?

ठीक इसीतरह अपने विचित्र पापमय परिणामों के फल से अनजान व्यक्ति ही उन पाप परिणामों में निरन्तर रमा रहता है और जिसे यह भान हो जाता है कि वे परिणाम काले नाग जैसे जहरीले हैं, तो फिर वह उनसे बचने का उपाय सोचता है।''

यही सब सोचकर ज्ञानेश ने धनेश को दो बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए प्रेरित किया; पर धनेश के पल्ले अभी तक कुछ नहीं पड़ा। पड़ता भी कैसे ? वह ज्ञानेश की बात ध्यान से सुनता ही कहाँ है? वह तो अपनी ही धुन में रहता है। उसका ध्यान ही कोई दूसरी दिशा में चल रहा है, इस कारण वह ज्ञानेश के कहे गये अभिप्राय को समझ ही नहीं पाता। समझना कोई बड़ी बात नहीं है; पर समझने की रुचि हो तब न !

धनेश भले ही धनाढ्य है, परन्तु उसकी प्रवृत्तियों से उसकी पत्नी, पुत्र और परिजन ह्न सभी परेशान हैं, दुःखी हैं। संसार का स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि यहाँ सबको सभीप्रकार की अनुकूलतायें नहीं मिल पातीं; क्योंकि ऐसा अखण्ड पुण्य किसी के भी पास नहीं होता। ऐसे दुःखी जीवों के दुःख को देखकर धर्मात्माओं के हृदय से ऐसी करुणा की धारा प्रवाहित हुए बिना नहीं रहती, जो उन्हें सत्य एवं सुखद सिद्धान्तों का निरूपण करने को प्रेरित करती है।

धनेश एवं उसके परिवार को मानसिक दुःख से दुःखी देख ज्ञानेश के हृदय में सहज करुणाभाव उमड़ पड़ता और वह उन्हें समझाने लगता। जब धनेश उसकी बातों की उपेक्षा करता तो ज्ञानेश स्वयं दुःखी होने के बजाय अपने मन में यह सोचकर संतोष कर लेता कि ''मेरे समझाने से धनेश की समझ सही होने वाली नहीं है, मैं तो निमित्तमात्र हूँ। जबतक उसमें स्वयं समझने की योग्यता नहीं आयेगी, तबतक मैं तो क्या, भगवान भी उसकी समझ को सही नहीं कर सकते।''

ऐसी पक्की श्रद्धा होने पर भी ज्ञानेश को बार-बार समझाने का भाव आये बिना नहीं रहता। अतः वह मित्र के नाते प्रेमवश धनेश को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करता रहता। ●

जयपुर की विभिन्न कॉलोनियों में धर्मप्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ **सी-स्कीम** स्थित श्री आदिनाथ चैत्यालय में पण्डित राजेशजी शास्त्री, शाहगढ़ द्वारा दिनांक 20 से 30 मई, 2006 तक दस दिवसीय शिविर में बालकों एवं प्रौढ़ो के लिये बालबोध पाठमाला की कक्षा संचालित की गई।

दिनांक 5 से 20 जून, 2006 तक श्री पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर, **मालवीयनगर से.7** में पण्डित राजेशजी शास्त्री के अतिरिक्त पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजयजी सेठी एवं श्रीमती ज्योतिजी सेठी द्वारा विभिन्न कक्षायें ली गईं।

इसके पश्चात् श्री मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर **आदर्शनगर** में दिनांक 21 से 30 जून, 2006 तक बाल कक्षा एवं प्रौढ कक्षा संचालित की गई। ज्ञातव्य है कि यहाँ पण्डित राजेशजी शास्त्री द्वारा विगत चार वर्षों से साप्ताहिक बाल कक्षा व प्रौढ कक्षा संचालित की जा रही हैं।

सभी स्थानों पर परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

मंगल कामना

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक चि. राजेन्द्र पाटील एलीमुन्नोली का विवाह सौ.जीवरत्ना (रानी) के साथ दिनांक 12 मई 2006 को सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष में बी.जी.श्रीपाल की ओर से 101/-रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ धन्यवाद !

आप लौकिक जीवन के साथ उत्कृष्ट पारलौकिक जीवन का निर्माण करें ह्न यही मंगल कामना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2006

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
गुरुवार 10 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शुक्रवार 11 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 12 अगस्त 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्मप्रभावना

1. दमोह (म.प्र.) : यहाँ काँच मन्दिर में दिनांक 8 से 12 जून, 06 तक ब्र. यशपालजी जैन के वस्तुव्यवस्था विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही तारण-तरण चैत्यालय में गुणस्थान की कक्षा तथा सेठजी मन्दिर में रत्नत्रय की पूर्णता विषयपर प्रवचन हुआ। इसी मंदिर में श्रोताओं की करणानुयोग सम्बन्धी शंकाओं का हृदयग्राही विवेचन किया गया।

2. बीना (म.प्र.) : यहाँ बड़ी बजरिया में दिनांक 12 से 15 जून, 2006 तक रत्नत्रय की पूर्णता एवं ज्ञानी जीव की परिणति विषयपर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में शंका-समाधान हेतु तत्त्वचर्चा का आयोजन किया गया। अनेक उत्साही विद्यार्थियों तथा श्रोताओं ने आपकी प्रेरणा से अनेक ग्रन्थों को कण्ठस्थ करके सुनाये।

द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर चर्चा

पश्चिम निमाड की धरा पर वर्षभर के लिये आयोजित किये गये द्रव्य-गुण-पर्याय वर्ष के अन्तर्गत दिनांक 22 से 25 जून तक बेडिया व बडवाह नगर में क्रमश: पण्डित कमलेशजी शास्त्री घुवारा एवं पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ द्वारा तीनों समय प्रवचन व कक्षा के माध्यम से उक्त विषय पर चर्चा की गई।

इसके पूर्व दिनांक 26 मई को मण्डलेश्वर से मलकापुर तक 13 नगरों में इसी विषय से संबंधित अर्धवार्षिक परीक्षा ली गई; जिसमें 523 लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ज्ञातव्य है कि पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद द्वारा तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु किये जा रहे अथक् प्रयासों से विगत वर्ष को छहढाला वर्ष के रूप में मनाया गया था। उसकी अपार सफलता को लक्ष में लेकर इस वर्ष को द्रव्य-गुण-पर्याय वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है; जिसमें विविध नगरों में द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर ही विशेष चर्चा वार्तायें तथा विषय से संबंधित प्रश्नोत्तरी भेजकर परीक्षायें आयोजित की जा रही है। **ह्न आर. के. जैन**

वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

इटावा (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर पंसारी टोला में नूतन संगमरमर वेदी का निर्माण किया गया। जिसका वेदी प्रतिष्ठा समारोह दिनांक 31 मई से 1 जून, 2006 तक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशदादाजी मैनपुरी एवं पण्डित सुनीलजी 'मामा' प्रतापगढ के मार्मिक प्रवचन हुये। विधि-विधानादि के कार्य पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी एवं पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल ने कराये।

इस अवसर पर जिनवाणी प्रकाशन हेतु पन्द्रह हजार छह सौ एक रुपये की राशी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रदान की गई। **ह्न सनत जैन**

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

पिडावा (राज.) : यहाँ श्री कुशालसिंहजी जैन परिवार की ओर से दिनांक 11 जून से 18 जून तक सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीनावालों के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

विधानादि के समस्त कार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री एवं पण्डित शशीकुमारजी ने सम्पन्न कराये।

आध्यात्मिक शिक्षण

–शिविर पत्रिका

प्रवचनसार का सार 54

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

अब, 'अध्रुवपने के कारण आत्मा के अतिरिक्त दूसरा कुछ भी उपलब्ध करने योग्य नहीं है' ऐसा उपदेश देनेवाली गाथा इसप्रकार हैह्न

देहा वा दविणा वा सुहदुक्खा वाध सत्तुमित्तजणा।
जीवस्स ण संति धुवा धुवोवओगप्पगो अप्पा।।193।।

(हरिगीत)

अरि-मित्रजन धन्य-धान्य सुख-दुख देह कुछ भी ध्रुव नहीं।
इस जीव के ध्रुव एक ही उपयोगमय यह आतमा।।

शरीर, धन, सुख-दुःख अथवा शत्रु-मित्रजन जीव के ये कुछ भी ध्रुव नहीं हैं; ध्रुव तो एक उपयोगात्मक आत्मा है।

मैं यहाँ प्रवचनसार की इस शैली पर विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि इस ग्रन्थ में बारम्बार शरीर, धनादिक को ही अध्रुव में गिनाया है, इन अध्रुव पदार्थों में राग-द्वेष की चर्चा तक नहीं की। राग-द्वेषादि को न तो ध्रुव आत्मा में ही लिया और न ही अध्रुव संयोगों में।

अरे भाई ! बात तो रागादिक छोड़ने की ही चल रही है। जिनसे हमें राग है ह्न ऐसे स्त्री-पुत्र और धनादिक में एकत्व छोड़ने का तात्पर्य ही यही है कि इनसे राग छोड़ना है।

जिसप्रकार कोई बाप अपने बेटे को समझाता है कि बेटा ! '**वेश्या विष बुझी कटारी**' अर्थात् वेश्या विष से बुझी हुई कटार है, बहुत स्वार्थी है, बर्बाद कर देगी, समाज में बदनाम कर देगी। बाप ने जो यह सब कहा, वेश्या की निन्दा की; वह वेश्या की निन्दा नहीं; अपितु बेटे के अन्दर वेश्या के प्रति जो राग है, आकर्षण है; उसकी ही निन्दा है। यह उपदेश वेश्या को छोड़ने का नहीं है; क्योंकि वेश्या तो पहले से ही छूटी हुई है। यह उपदेश तो वेश्या के प्रति राग छोड़ने का है। इसप्रकार भाषा तो होती है उस व्यक्ति को छोड़ने की और भाव होता है उनके प्रति राग छोड़ने का।

इसीप्रकार यहाँ पर आचार्यदेव ने देह, धनादिक के प्रति राग ही छुड़ाया है; क्योंकि ये देह, धनादि पदार्थ तो कभी जीव के हुए ही नहीं हैं। ये पदार्थ तो पुण्य के अस्त होने पर स्वत: ही छूट जाते हैं।

तदनन्तर 'शुद्धात्मा की उपलब्धि से क्या लाभ है ?' इस बात का निरूपण करनेवाली गाथायें प्राप्त होती हैं; जो इसप्रकार हैं ह्न

जो एवं जाणित्ता झादि परं अप्पगं विसुद्धप्पा।
सागारोऽणागारो खवेदि सो मोहदुग्गंठिं।।194।।
जो णिहदमोहगंठी रागपदोसे खवीय सामण्णे।
होज्जं समसुहदुक्खो सो सोक्खं अक्खयं लहदि।।195।।

(हरिगीत)

यह जान जो शुद्धातमा ध्यावें सदा परमातमा।
दुठ मोह की दुर्ग्रन्थि का भेदन करें वे आतमा।।
मोहग्रन्थी राग-रुष तज सदा ही सुख-दुःख में।
समभाव हो वह श्रमण ही बस अखयसुख धारण करें।।

जो ऐसा जानकर विशुद्धात्मा होता हुआ परम आत्मा का ध्यान करता है, वह साकार हो या अनाकार मोहदुर्ग्रंथि का क्षय करता है।

जो मोहग्रंथि को नष्ट करके, राग-द्वेष का क्षय करके, समसुख-दुःख होता हुआ श्रमणता (मुनित्व) में परिणमित होता है, वह अक्षय सुख को प्राप्त करता है।

इन गाथाओं में यह कहा गया है कि जो व्यक्ति स्वयं को 'मैं शुद्ध आत्मा हूँ' ऐसा जानता है; वह व्यक्ति ह्न चाहे साकार अर्थात् ज्ञान उपयोग वाला हो या अनाकार अर्थात् दर्शन उपयोग वाला हो अथवा चाहे मुनि हो या श्रावक हो ह्न अपनी मोहरूपी गांठ को खोल देता है अथवा उसकी मोहरूपी गांठ खुल जाती है और जिसकी मोहग्रन्थि खुल जाती है, वह श्रमण राग-द्वेष का क्षय करके समताभाव को धारण करता हुआ अनंत सुख को प्राप्त करता है अर्थात् समस्त विकारों और दुखों से मुक्त हो जाता है।

मैं यहाँ इस बात की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि यह प्रकरण देह, धनादि से भिन्नता बतलानेवाला होने से स्थूल हो ह्न ऐसा नहीं है। ऐसा भी नहीं समझना चाहिए कि प्रवचनसार में मात्र देह, धनादिक से भिन्नता बतलाई है, उसके बाद समयसार में रागादि से भिन्नता, केवलज्ञान से भिन्नता बताकर मोक्षमार्ग पूरा करेंगे।

अरे भाई ! 200 वीं गाथा तक पहुँचकर आचार्यदेव इसी प्रवचनसार ग्रन्थ में मोक्ष की बात बतलाएंगे। जिनकी स्त्री, पुत्र, देह से एकत्वबुद्धि छूटेगी, कर्तृत्वबुद्धि छूटेगी तो उनकी राग में एकत्वबुद्धि-कर्तृत्वबुद्धि भी छूटेगी ही।

राग जीव की पर्याय में होता है तथा '**य: परिणमति स कर्त्ता**' के अनुसार जीव राग का कर्त्ता भी है; लेकिन जिसका देह, धनादिक में एकत्व छूट गया है; वह उस राग में ऐसी कर्तृत्वबुद्धि नहीं करेगा कि यह राग करने योग्य है। वह जीव यही समझेगा कि यह राग तो परद्रव्य के उदय की बलवत्ता से हुआ है अथवा वह यह समझेगा कि पर्यायगत योग्यता से हुआ है तथा पर्याय की कर्त्ता पर्याय है।

इसके बाद, आचार्यदेव ऐसा प्रश्न करते हैं कि जिनने शुद्धात्मा को उपलब्ध किया है ऐसे सकलज्ञानी (सर्वज्ञ) क्या ध्याते हैं ?

णिहदघणधादिकम्मो पच्चक्खं सव्वभावतच्चण्हू।
णेयंतगदो समणो झादि कमट्ठं असंदेहो।।197।।

(हरिगीत)

घन घातिकर्म विनाश कर प्रत्यक्ष जाने सभी को।
संदेहविरहित ज्ञेय ज्ञायक ध्यावते किस वस्तु को।।

जिनने घनघातिकर्म का नाश किया है, जो सर्व पदार्थों के स्वरूप को प्रत्यक्ष जानते हैं और जो ज्ञेयों के पार को प्राप्त हैं, ऐसे संदेह रहित श्रमण किस पदार्थ को ध्याते हैं ?

इस गाथा का भाव यह है कि जो देह और धन से भिन्न अपने को जानता है और अपनी आत्मा का ध्यान करता है, वह घातिया कर्मों का नाश कर देता है।

'मैं देह, धनादि नहीं हूँ तथा मैं इनका कर्त्ता भोक्ता नहीं हूँ' ऐसी मान्यता से मिथ्यात्व कर्म का नाश हुआ है और जब इन पदार्थों से राग छूटेगा तभी चारित्रमोहनीय कर्म का नाश होगा तथा जब दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय - इन दोनों का अभाव हो जाएगा, तब एक समय बाद निश्चितरूप से ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अंतराय कर्म का अभाव हो जाएगा तथा केवलज्ञान हो जाएगा।

इसप्रकार प्रवचनसार ग्रन्थ में कुन्दकुन्दाचार्य ने इसी शैली में मोक्ष तक पहुँचने की बात कह दी है।

इसके बाद, इसी गाथा की टीका इसप्रकार है ह्न

'लोक को (1) मोह का सद्भाव होने से तथा (2) ज्ञानशक्ति के प्रतिबन्धक का सद्भाव होने से, वह तृष्णा सहित है तथा उसे पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं है; इसलिये अभिलषित, जिज्ञासित और संदिग्ध पदार्थ का ध्यान करता हुआ दिखाई देता है; परन्तु घनघातिकर्म का नाश किया जाने से मोह का अभाव होने के कारण तथा ज्ञानशक्ति के प्रतिबन्ध का अभाव होने से तृष्णा नष्ट की गई है तथा समस्त पदार्थों का स्वरूप प्रत्यक्ष है तथा ज्ञेयों का पार पा लिया है; इसलिये भगवान सर्वज्ञदेव अभिलाषा नहीं करते, जिज्ञासा नहीं करते और संदेह नहीं करते; तब फिर (उनके) अभिलषित, जिज्ञासित और संदिग्ध पदार्थ कहाँ से हो सकता है ? ऐसा है तब फिर वे क्या ध्याते हैं ?'

टीका में यह कहा गया है कि दुनिया के सारे लोग तीन तरह के पदार्थों का ध्यान करते हैं। वे तीन प्रकार के पदार्थ अभिलषित, जिज्ञासित और संदिग्ध हैं। अभिलषित पदार्थ वे हैं जिन्हें लोग चाहते हैं जैसे - स्त्री, पुत्र, धनादि। जिज्ञासित पदार्थ वे हैं, जिनको सिर्फ जानने की इच्छा होती है; लेकिन प्राप्त करने की नहीं, जैसे - सुमेरुपर्वत चाहिए तो नहीं है, लेकिन देखना चाहते हैं; ताजमहल चाहिए तो नहीं है, लेकिन एक बार देखना है; अमेरिका में जाकर रहना तो नहीं है; लेकिन एकबार अमेरिका देखना जरूर है। इसप्रकार जिज्ञासित पदार्थ वे हैं, जिनको सिर्फ जानने की इच्छा है; संदिग्ध पदार्थ वे हैं, जिसमें संदेह हो कि पदार्थ इसप्रकार है, अन्यप्रकार।

इसप्रकार संसारी प्राणी इन तीनप्रकार के पदार्थों का ध्यान करते हैं तथा भगवान इन तीनों का ही ध्यान नहीं करते हैं, भगवान को अभिलाषा नहीं होने से वे अभिलषित पदार्थों का ध्यान नहीं करते हैं, सारा लोकालोक जानने में आ जाने से जिज्ञासा नहीं रहने के कारण जिज्ञासित पदार्थों का ध्यान नहीं करते हैं, किसी भी पदार्थ में संशय नहीं होने से संदिग्ध पदार्थों का ध्यान नहीं करते हैं। भगवान अपने सुखस्वरूप भगवान आत्मा का ही ध्यान करते हैं अथवा प्राप्त करने की अपेक्षा से सुख का ध्यान करते हैं अन्य किसी भी पदार्थ का ध्यान नहीं करते हैं।

पूर्वोक्त गाथा में आचार्य ने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि 'जिनने घनघाति कर्म का नाश किया है, जो सर्व पदार्थों के स्वरूप को प्रत्यक्ष जानते हैं और जो ज्ञेयों के पार को प्राप्त हैं, ऐसे संदेह रहित श्रमण किस पदार्थ को ध्याते हैं ?' और मुक्ति का मार्ग क्या है ?ह्न इसी प्रश्न के उत्तरस्वरूप गाथा 198-199 हैं, जो इसप्रकार हैं ह्न

सव्वाबाधविजुत्तो समंतसव्वक्खसोक्खणाण्ड्ढो।
भूदो अक्खातीदो झादि अणक्खो परं सोक्खं।।198।।
एवं जिणा जिणिंदा सिद्धा मग्गं समुट्ठिदा समणा।
जादा णमोत्थु तेसिं तस्स य णिव्वाणमग्गस्स।।199।।

(हरिगीत)

अतीन्द्रिय जिन अनिन्द्रिय अर सर्व बाधा रहित हैं।
चहुँ ओर से सुख-ज्ञान से समृद्ध ध्यावे परमसुख।।
निर्वाण पाया इसी मग से श्रमण जिन जिनदेव ने।
निर्वाण अर निर्वाणमग को नमन बारंबार हो।।

अनिन्द्रिय और इन्द्रियातीत हुआ आत्मा सर्व बाधा रहित और सम्पूर्ण आत्मा में समंत (सर्वप्रकार के, परिपूर्ण) सौख्य तथा ज्ञान से समृद्ध वर्तता हुआ परम सौख्य का ध्यान करता है।

जिन, जिनेन्द्र और श्रमण को, (अर्थात् सामान्यकेवली, तीर्थंकर और मुनि) जो कि इस (पूर्वोक्त ही) प्रकार से मार्ग में आरुढ़ होते हुए सिद्ध हुए हैं और उस निर्वाण मार्ग को नमस्कार हो।

'जिन' का तात्पर्य ऐसे भगवान हैं; जो कि अरहंत तीर्थंकर हुए बिना मोक्ष गए हैं तथा 'जिनेन्द्र' अर्थात् तीर्थंकर और श्रमण अर्थात् सामान्य केवली हैं। ये सभी पूर्वोक्त प्रकार मार्ग पर आरुढ़ होते हुए सिद्ध हुए हैं। यही मोक्ष जाने का रास्ता है।

आचार्यदेव कहते हैं कि उस मोक्षमार्ग पर चलने की विधि क्या है ? तथा उस पर कैसे चलना पड़ता है ? ह्न यह सब हम चरणानुयोग सूचक चूलिका में कहेंगे। इसप्रकार आचार्य ने अगले अधिकार की भूमिका भी कह दी। आचार्य स्पष्ट करते हैं कि हमने मोक्ष का मार्ग तो यहाँ बता दिया है तथा 'मोक्षमार्ग पर चलनेवाले क्या-क्या करेंगे ?' इसका सारा वर्णन चरणानुयोगसूचक चूलिका में करेंगे।

इसी संबंध में इसी गाथा की टीका भी द्रष्टव्य है ह्न

''सभी सामान्य चरमशरीरी, तीर्थंकर और अचरमशरीरी मुमुक्षु इसी यथोक्त शुद्धात्मतत्वप्रवृत्तिलक्षण विधि से प्रवर्तमान मोक्षमार्ग को प्राप्त करके सिद्ध हुए; किन्तु ऐसा नहीं है कि किसी दूसरी विधि से भी सिद्ध हों।

इससे निश्चित होता है कि केवल यह एक ही मोक्ष का मार्ग है, दूसरा नहीं। अधिक विस्तार से बस हो! उस शुद्धात्मतत्व में प्रवर्ते हुए सिद्धों को तथा उस शुद्धात्मतत्वप्रवृत्तिरूप मोक्षमार्ग को, जिसमें से भाव्य और भावक का विभाग अस्त हो गया है ह्न ऐसा नोआगमभाव नमस्कार हो ! मोक्षमार्ग अवधारित किया है, कृत्य किया जा रहा है, अर्थात् मोक्षमार्ग निश्चित किया है और उसमें प्रवर्तन कर रहे हैं।''

टीका में यह कहा गया है कि इस मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा मार्ग नहीं है; केवल यही एक मोक्ष का मार्ग है। टीका में जो 'नोआगमभाव नमस्कार हो' कहा है उसका तात्पर्य यह है कि आचार्यदेव कहते हैं कि हम ऐसे ही नमस्कार नहीं कर रहे हैं, अपितु स्वयं उसी मार्ग पर चल रहे हैं। आचार्य 24 घंटे उन्हें नमस्कार कर रहे हैं; क्योंकि वे 24 घंटे उन्हीं के बताए मार्ग पर चल रहे हैं। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

शिक्षण शिविर सम्पन्न

1. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के पावन अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 1 जून से 10 जून तक दस दिवसीय शिक्षण-शिविर का आयोजन बाल ब्र. केशरीचन्दजी 'धवल' के निर्देशन में किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ स्थानीय एवं बाहर से पधारे हुये साधर्मियों को प्राप्त हुआ। साथ ही पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षा का आयोजन किया गया। शिविर के मध्य जिनवाणी चल समारोह, अहिंसा रैली, पूजन-प्रशिक्षण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

2. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 11 से 18 जून, 2006 तक षष्ठम बाल संस्कार शिक्षण शिविर एवं सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर तथा स्थानीय विद्वानों में पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित हेमन्तजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शाह, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री, डॉ. ममताजी जैन द्वारा प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन एवं विभिन्न कक्षायें ली गई। ध्रुवधाम-बांसवाड़ा में अध्ययनरत छात्रों ने भी कक्षायें ली।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा के निर्देशन में सम्पन्न कराये गये तथा सम्पूर्ण शिविर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

3. जबेरा (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन तथा कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 20 मई से 4 जून, 2006 तक शिक्षण शिविर लगाया गया।

शिविर में पण्डित विनोदकुमारजी, पण्डित कमलकुमारजी, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित धीरजजी शास्त्री, पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित प्रमेशजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित सोनलजी शास्त्री द्वारा विविध कक्षायें ली गई। अन्तिम दिन समस्त छात्रों की परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया। **ह्न कमलकुमार जैन**

4. खण्डवा (म.प्र.) : यहाँ स्व. श्री फकीरचन्दजी की स्मृति एवं स्थानीय मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से दिनांक 18 से 25 मई, 2006 तक पंचम बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर, पण्डित एलमचन्दजी शास्त्री गढ़खेडा, पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा द्वारा विभिन्न कक्षायें ली गई।

शिविर के मध्य पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विधान एवं रात्रि में ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया।

हार्दिक बधाई

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.), नई दिल्ली द्वारा लेक्चररशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **प्रवीण शास्त्री जयपुर** का चयन हो गया है।

जैन पथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

वैराग्य समाचार

1. एटा निवासी श्री रामप्रकाशजी जैन का 84 वर्ष की आयु में दिनांक 7 जून, 2006 को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया है। आप धर्मप्रेमी एवं स्वाध्यायी प्रवृत्ति के महानुभाव थे। आपकी स्मृति में पण्डित अनंतवीर जैन की ओर से 100/- रुपये प्राप्त हुए है।

2. विदिशा निवासी श्री ऋषभकुमारजी जैन का आकस्मिक देहावसान हो गया है। आप पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल के ज्येष्ठ सुपुत्र थे। आप सरल स्वभावी एवं धर्मप्रेमी व्यक्ति थे। स्थानीय दिगम्बर जैन मन्दिर के सदस्यों में भी आप प्रमुख एवं उत्साही कार्यकर्त्ता थे।

3. जयपुर निवासी श्री दुलीचन्दजी निगोदिया का दिनांक 9 जून, 06 को देहावसान हो गया है। आप सरलस्वभावी स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। आपकी स्मृति में 251/-रुपये जैनपथप्रदर्शक समिति को प्राप्त हुये है।

4. जयपुर निवासी श्री भागचन्दजी बैराठी का दिनांक 19 जून को हृदयाघात के कारण देहावसान हो गया है। आप सरलप्रवृत्ति के मृदुभाषी महानुभाव थे। शिक्षा के क्षेत्र में आपका सक्रिय योगदान रहा है।

दिवगंत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

अवश्य लाभ लें

रात्रि 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना न भूलें। प्रवचन प्रसारण में कोई समस्या हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 पर सम्पर्क करें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (प्रथम) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127